



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(3 अगस्त, -7 अगस्त, 2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

अरेराज प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियाँ		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।

मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबरस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देही, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। अम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लॉगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गड्ढों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गड्ढे में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सावधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे

		स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करें। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दें।
डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)		नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861		9368411887
head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in		gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.07.2019

संग्रामपुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।

अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से 0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-ब्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रेडनेन, रोबरस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुटियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द'हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि'त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी		पहले से तैयार गड्डों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर

पौधे		पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्वा बवेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)	नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861	9368411887
head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in	gkmseastchamparan@gmail.com

		<p>खर कराने बाद मिट्टी जांच गहरा कराया गया है ता गन्धक एवं लवण जमाव का कारण का लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटेश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटेश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
टरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटेश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-ब्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।

वेला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
टाम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देही, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चरा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गड्डों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गड्डे में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्यें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइटा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcu.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

बंजरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।

मिर्च	मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज	खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला	केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम	किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देही, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। अम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची	लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज	प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा	पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें	पहले से तैयार गड्डों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गड्डे में दे।
फल परिरक्षण	कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सावधानी बरतें।
दुधारु पशु	वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे

		स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करें। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैंतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)	नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861	9368411887
head.kvk.piprakothe@rpcu.ac.in	gkmseastchamparan@gmail.com

		<p>कर कराने के बाद मिट्टी जांच गहरा करवाया गया है ता मन्व्यम एवं लम्बा जवाब का किरसा का लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से 0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से 0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-ब्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। प्रखंड में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई,

		एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में 'समरबहि'त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)
9473000861
head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)



डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोटी

दिनांक 02.08.2019

हरसिद्धि प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटैश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 किं०टल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।

केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रेडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण विमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्वा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दें अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से 0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से 0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
सब्जियों		<p>उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।</p>
मिर्च		<p>मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।</p>
प्याज		<p>खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।</p>
केला		<p>केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनीयों, शक्कर चिनीयों, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।</p>
आम		<p>किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द"हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि"त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।</p>

लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे दे'भी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पोष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्यें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।
डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)		नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861		9368411887
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in		gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

मेहसी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटैश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियाँ		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई,

		एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। अम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लोंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सावधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण विमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्सी बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।
डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)		नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861		9368411887
head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in		gkmseastchamparan@gmail.com
		पर करत बाद लट्टा जाय गहा करतया गवा हा ता गव्वन एव लत्वा जवाय का करतया क मलए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटेश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटेश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेर) या

		पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से 0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उच्चस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से 0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देही, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेन्द्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। अम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देही, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लॉगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वृत्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।

फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्ये बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(02.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

पकड़ीदयाल प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।

- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 किंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रेडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द"हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि"त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजू के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी

		तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्ये बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु मे उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी मे भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरो को पोटेशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओ को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसो को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंढा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह मे रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओ के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

		पर करन पाव निम्न जाव गहा करपा गया हा सा नव्वन एवं लम्बा जवाव का नकरना कालर 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।

गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचाँस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-ब्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रेडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देही, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिंत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देही, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गड्डों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गड्डे में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु

		पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान) 9473000861 head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in	नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम) 9368411887 gkmseastchamparan@gmail.com
---	---



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेंस 16 /AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-
- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।

अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से 100 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 किंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबरस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द'हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि'त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी		पहले से तैयार गड्डों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर

पौधे		पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलार्ये बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दधारु पशु		वर्षा ऋतु मे उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगडी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी मे भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरो को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओ को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसो को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओ को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ टंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह मे रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओ के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेस 16 /AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-
- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 पतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 पतिशत रहने की संभावना है।

- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटैश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 किंवटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबरस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिंत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा

		लेट बं दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊंचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गड्डों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गड्डे में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्ये बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवाधानी बरतें।
दुधारु पशु		वर्षा ऋतु मे उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगडी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी मे भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरो को पोटाशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओ को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसो को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह मे रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओ के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।
डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)		नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861		9368411887
head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in		gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

सुगौली प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटैश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-ब्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शककर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुटियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन

		कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जडदालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिंत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊंचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दें।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्सी बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दें। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दें अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करें। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दें।
डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान) 9473000861 head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in		नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम) 9368411887 gkmseastchamparan@gmail.com
		<p>पर फसल बाद लड़ा जाय गहा कराया गया हा ता नव्यन एव लक्षा जवाव का फरसा काले 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटेश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटेश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के</p>

		अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेयर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
टरहर		उच्चोस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटैश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चोस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
टाम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दे'हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि'त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। अम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे दे'गी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊंचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चरा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु

		पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ों में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्यो बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।
डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)		नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861		9368411887
head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in		gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

तेतरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।

- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्व से पक्व की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियाँ		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शककर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द"हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि"त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।

लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अलीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलार्ये बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु मे उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी०पी०आर०, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ के पानी मे भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरो को पोटेशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओ को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसो को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओ को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह मे रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओ के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothei@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)

डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोटी

दिनांक 02.07.2019

तुरकौलिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्व से पक्व की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियाँ		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शककर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया

		अनुभांसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बोनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरवहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशांसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजू के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अलीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दुधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्वा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दें अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।
डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)		नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861		9368411887
head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in		gkmseastchampan@gmail.com
		पर करण चारु मिट्टी जाय गहा परतवा गवा हा ता मव्वग एव लम्बा जवाव का किरमा क लार 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटेश तथा अगात किस्मों के

		<p>लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेयर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से 0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से 0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
सब्जियों		<p>उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।</p>
मिर्च		<p>मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।</p>
प्याज		<p>खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।</p>
केला		<p>केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबरस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।</p>
आम		<p>किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिंत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।</p>
लीची		<p>लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देही, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।</p>
खरीफ प्याज		<p>प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें।</p>

		पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊंचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्यें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019- 07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

ढाका प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियाँ		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द"हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि"त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी,

		जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशांसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सावधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी०पी०आर०, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटाशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.07.2019

मधुबन प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उचाँस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटैश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचाँस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा,

		बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहित, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेष, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पोष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्वा बवेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दें अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

अदापुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व

		थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरवहित, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजू के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्यें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांत्वानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्वा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।

मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैंतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।
डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान) 9473000861 head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in		नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम) 9368411887 gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

चकिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उच्चोस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई

		के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से 0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द'हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि'त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गडों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गडों में दे।
फल		कृशक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों

परिरक्षण		को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्वा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरो को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)
9473000861
head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 07.08.2019

चिरैया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दे'हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में 'समरबहि'त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। अम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लोंगिया, स्वर्गरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।

खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्यें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु मे उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बवेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी मे भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरो को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओ को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसो को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओ को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ढंढा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह मे रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओ के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

छौरादाना प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबरस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग,

		अमन द'हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में ' समरबहि'त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजू के लिए 12 मीटर रखें। अम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लोंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्सा बवेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाम्भीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र



पिपराकोटी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोटी

दिनांक 02.08.2019

घोड़ासन प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्व से पक्व की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से

		नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबरटा, बसराई, फिआ-1 अनुशांसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशांसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशांसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गड्डों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गड्डे में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण विमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्वा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटाशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(31.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

कल्याणपुर प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उच्चोस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चोस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-ब्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का

		लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रेडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देही, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसेलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊंचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सावधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्सा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में

		रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान) 9473000861 head.kvk.piprakothe@rpcu.ac.in	नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम) 9368411887 gkmseastchamparan@gmail.com
---	---



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.07.2019

केसरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करे। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45

		किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटैश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 सेमी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबरस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिंत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गड्डों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गड्डे में दे।

फल परिरक्षण		कृषक महिलार्ये बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु मे उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगडी बुखार, सर्पा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी मे भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरो को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओ को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसो को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओ को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ टंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह मे रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओ के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

कोटवा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 पतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 पतिशत रहने की संभावना है।

- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटैश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 किंवटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबरस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिंत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा

		लेट बं दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्ये बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांघधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरो को पोटाशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

मोतिहारी, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटैश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिदुआ, गुलाबखास, बम्बई,

		एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशांसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। अम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लॉगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलार्यें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सावधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण विमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र



पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.08.2019

पताही प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति

		हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शककर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबरस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशांसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशांसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द'हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि'त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशांसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊँचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 ली0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलार्ये बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्वा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटाशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02 .08.2019

प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।

मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देही, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। अम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लॉगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गड्ढों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गड्ढे में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सावधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे

		स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान) 9473000861 head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in	नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम) 9368411887 gkmseastchamparan@gmail.com
---	---



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03.08.2019-07.08.2019)

रेफरेंस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 03.08.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-
- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करे। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।

अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से 0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रेडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द"हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि"त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष		पहले से तैयार गडों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक

तथा वानिकी पौधें		तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्सा बवेसियोसिस, पी०पी०आर०, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरो को पोटेशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.07.2019

रामगढ़वा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।

- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्व से पक्व की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द"हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि"त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अन्नपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।

लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अलीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृशक महिलार्यें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु मे उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्वा बबेसियोसिस, पी०पी०आर०, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी मे भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह मे रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)

डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019-07.08.2019)

रक्तसौल प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिनग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उर्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उर्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-ब्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5

		मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिटुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन द"हरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि"त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाश कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजू के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब'दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गडों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्वा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से बचने के लिए पशु गृह में रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(03.08.2019 -07.08.2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 02.07.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	अगस्त माह के पंचम सप्ताह में किसानों लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दे। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उच्च जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूशक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्च जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-ब्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का

		लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रेडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन देही, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहि, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आमपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट वेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसेलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सावधानी बरतें।
दूधारु पशु		वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्सा बबेसियोसिस, पी0पी0आर0, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगे चारा या दाना नहीं दे। पशुओं के पैरों को पोटेशियम परमेगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दे अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय-भैंसों को खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंडा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए पशु गृह में

		रोशनी की समुचित व्यवस्था करे। पशुओ के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान)

9473000861

head.kvk.piprakothe@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com
